गुगल/गुग्गलू

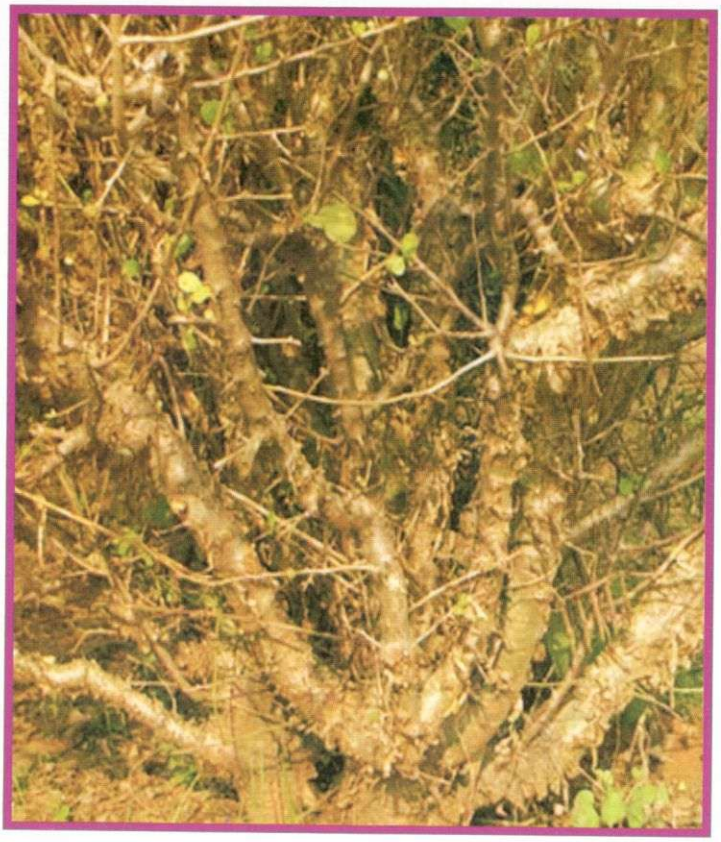

RSMPB JAIPUR

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com
Website : www.rsmpb.com

गुगल/गुग्गलू

वानस्पतिक नाम - Commiphora Wighttii (Arnott) Bhard/ Commiphora mukul (Hook ex stocks)

गुगल का पौधा भारत में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, आसाम, सिलहट, बंगाल, मैसूर आदि स्थानों पर जंगलो में प्राकतिक रूप में पाया जाता है। राजस्थान में मुख्यतया मारवाड व मेंवाड क्षेत्र में पाया जाता है।

गुगल का पौधा जंगल में झाडियों के रूप में पाया जाता है। इसकी शाखाएं छोटी व टेढी–मेढी होती है। ये शाखाएं कांटेदार व विभिन्न रंगो वाली होती है। इसकी शाखाओं से हमेशा भूरे रंग का पतला छिलका उतरता दिखाई देता है। सर्दियों में इसके सभी पत्ते झड जाते है। इसके फल मांसल, लबें गोल, छोटे बेर के समान होते हैं, जिन्हें राजस्थान में गुगलियां कहते है। इसके तने व शाखाओं से जो गोंद निकलता है, वही गुग्गुल (गुगल) कहलाता है। असली गुगल का रंग नवीन हालत में पीला और पुराना पडने पर काला हो जाता है। पानी में गलने पर हरे रंग की झांई सी देता है। असली गुगल अग्नि पर रखने पर एकदम से नहीं जलता हैं।

1. **औषधीय उपयोग** :– गुग्गुल एक दिव्य औषधि है। यह कृमिनाशक, गण्डमाला हार, कफ निस्सारक, मूत्रल, रसायन, वल्य, शीत प्रशमन, वर्ण्य, नाडीबल्य, वण्रशोधक व जन्तुघ्न होता है। गुगल का उपयोग वातरक्त, आमवत, वण्रशोध, नाडीवण्र, भगन्दर, कुवठ, प्रमेह, मूत्रकृच्छ, श्लीपद, गण्डमाला, उपदेश, नेत्ररोग, शिरारोग, ह्रदय रोग, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, पाण्डुरोग, उदररोग आदि में प्रभावी रूप से किया जा सकता है। गुगल के धूम को अथर्ववेद में यक्ष्मा के कीटाणुओं को नष्ट करनें वाला कहा गया है। नाडी संस्थान पर गुग्गुल का प्रभाव लाभकारी रहता है। गुगुल त्रिदोष हर, शोथहन, कृमिध्न, व वेदना स्थापन होने के कारण केन्सर में भी लाभप्रद है। यह वसा व पित्त के चपापन्चय के कारण उत्पन्न होनें वाला व ह्रदय रोगों को

दूर करने में सहायक है। इसें औषधि प्रयोग में सदैव शुद्व करके काम में लेना चाहिए।

2. जलवायु एवं कृषि :– यह सामान्यतः मरूस्थल और पहाडी इलाकों में पाया जाता है लेकिन इसे उत्तरी पश्चिमी भारत के गर्म एवं अर्द्वशुष्क प्रदेश, पहाडियों के ऊपर कठोर चट्टानी मिट्टी में उगा सकते है। यह सूखा एवं लवणीय भूमि के लिए प्रतिरोधीं है तथा 100–500 मिमि. वार्षिक वर्षा तथा 45–50 डिग्री सेल्सियस के अधित तापक्रम झेलने वाले भागों में सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है। दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. 7.5–9.0 हो, इसकें लिए उपयुक्त मानी जाती है।

3. प्रवर्धक :– गुग्गल का प्रवर्धन बीजों द्वारा अथवा कलम लगाकर किया जा सकता है। बीजों द्वाराः– प्रकति में गुग्गल का मुख्य प्रवर्धन बीजों के द्वारा होता है। राजस्थान एवं आसपास के शुष्क क्षेत्रों में सर्दियो को छोडकर बीज लगातार बनते रहते है। अप्रैल–मई में प्राप्त होनें वाले बीजों की तुलना में जुलाई–सितंबर में प्राप्त होनें वाले बीजो की अंकुरण क्षमता ज्यादा होती है। मानसून में इसके बीजों के अंकुरण के लिए उपयुक्त वातावरण रहता है। परिपक्व बीजों को क्ले मिट्टी के साथ रगडकर धोते है।

4. कलम द्वारा :– गुग्गुल के पौधे कलम द्वारा सफलतापूर्वक तैयार किये जा सकते है। इसकी 25–30 सेमी. लम्बी एवं 3–4 सेमी. व्यास वाली कलमों को 15 जनवरी से 15 फरवरी तक रेत वाली क्यारियों में 15 सेमी. की गहराई पर रोपना चाहिए। पॉलीथीन की थैलियों का उपयोग भी किया जा सकता है। कलम की मोटाई तर्जनी अंगुली से पतली तथा हाथ के अंगुठे से मोटी नहीं होनी चाहिए। सुदृढ जड विकसित होने के लिए पादप हार्मोन इन्डौल ब्यूटायरिक अम्ल (IBA) के 250 पी.पी.एम. के घोल से उपचारित करना चाहिए। इस प्रकार पौधों को लगभग 6 माह तक नर्सरी में रखने के बाद बरसात के मौसम में खेत में रोपित कर देना चाहिए।

5. खेत में स्थानान्तरण :– जुलाई से सितम्बर तक का समय इन पौधों (कलमों) को खेत में लगाने का होता है। इस कार्य हेतु सर्वप्रथम 60×60×60 सेमी. के गड्ढे पौधें लगाने के लिए खोदे जाते है। जिस थैली में पौध लगाई गई हो, उस पॉलीथीन की थैली को चाकू से काटकर अलग कर ले व उस पौधें को मिट्टी की पिण्ड सहित तैयार किये गये गडढे में रोप दें। पौधों को खेत में लगाते समय कतार से कतार व पौधें से पौधें के मध्य 2 मीटर की दूरी रखी जाती है। इस प्रकार प्रति हैक्टेयर 2500 पौधें लगाये जाते है। पौधा लगाने के बाद उसके चारों तरफ की मिट्टी को अच्छी तरह दबा देना चाहिए एवं हल्की सिंचाई कर देंनी चाहिए।

6. सिंचाई :– गुग्गुल के पौधें को एक बार खेत में अच्छी प्रकार से स्थापित होने के बाद बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। वर्षा नही होने पर पांच वर्ष की उम्र तक इसके पौधों को शरद ऋतु में एक सिंचाई की आवश्यकता होती है। आठ वर्ष की उम्र के बाद जब पौधें पूर्ण विकसित हो जाये तब गर्मियों में 2–3 सिंचाई करनी चाहिए।

7. निराई–गुडाई :– वर्षा के मौसम में, खेत में खरपतवार काफी मात्रा में हो जाते है। खरपतवारों की अधिक मात्रा होनें पर पौधों को पोषक तत्वों एवं पानी की उपलब्धता कम हो जाती है, इसलिए सितबंर एवं दिसबंर में निराई–गुडाई करना उपयोगीं होता है।

8. गुग्गुल निकालने की विधि :– गुग्गुल का पौधा लगभग 8 वर्ष में पूर्ण परिपक्व होकर गोंद सग्रंह योग्य हो जाता है। इन परिपक्व पौधों से दिसबंर–फरवरी में गोंद सग्रंह किया जाता है। जब पौधें का व्यास 7.5 सेमी. का हो जायें, तब गोंद प्राप्त करने हेतु मुख्य तने एवं शाखाओं पर 1.5 सेमी. गहरा वृत्ताकार चीरा 30 सेमी. एवं 60 डिग्री कोण पर सामान अन्तराल पर लगाया जाता है। चीरा वाले स्थानों से सफेद पीला सुगंधित गोंद स्त्रावित होता है जो कि धीरे–धीरे ठोस होने लगता है जिसे चाकू की

सहायता से एकत्रित कर लिया जाता है। 10–15 दिन के अंतराल पर यह प्रकिया दोहराते रहते है। केम्बियम परत पर चीरे नजदीक एवं गहरे लगााने पर गोंद की उपज अधिक प्राप्त की जा सकती है। गोद सग्रंह में रसायनों का उपयोग भी लाभकारी सिद्व हुआ है। तीन साल में एक बार इथेफान (2 क्लोरो –इथॉयल फास्फोरिक एसिड) 400 मिली. प्रति पौधा छिडकनें से गोंद का स्त्राव काफी बढ जाता है। इस विधि से प्रत्येक पौधें से 500 ग्राम से 1500 ग्राम तक गुग्गुल प्राप्त हो जाता है। गुग्गुल निकालने की एक नई विधि सेन्ट्रल एरिड जोन रिसर्च इन्स्टीट्यूट (काजरी), जोधपुर द्वारा ईजाद की गई है। इस विधि के अनुसार गुग्गुल के पौधें 2 वर्ष के हो जाने पर इनकें मुख्य तने तथा शाखाओं को छोंडकर हाथ के अंगुठे से कम पतली वाली शाखाएं कटर के द्वारा काट ली जाती है। इसे छंटाई कहते है। इस प्रकार छंटाई की शाखाओं को इकट्ठा करके कुट्टी करने वाली मशीन से आधा इंच से एक इंच तक काट लेते है, जिसे कुट्टी या कुतर करना कहते है। तदुपरान्त इसे धूप में सुखाते है। छंटाई करने का सर्वाधिक उपयुक्त समय 14 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य का है। इस समय पौधें में रेजिन की मात्रा सर्वाधिक होती है।

9. श्रेणीकरण :– अच्छी श्रेणी का गुगल पौधों की मोटी शाखाओं से प्राप्त होता है। ये गोंद के ढेले अर्द्वपारदर्शक होते है। दूसरी श्रेणी के गुगल में छाल, मिट्टी मिली होती है एवं हल्के रंग का होता है। तीसरी श्रेणी का गुगल प्रायः भूमि की सतह से इकट्ठा किया जाता है। जिसमें मिट्टी, पत्थर के टुकडे एवं अन्य पदार्थ मिले होते है। हल्की श्रेणी के गुगल के ढेर पर अरण्डी के तेल का छिडकाव करके सुधारा जा सकता है, जिससे इसमें चमक आ जाती है।

10. पौध सरंक्षण :–

1. गर्मियों के मौसम में प्रायः गुग्गल के पौधों पर दीमक का प्रकोप होता है। दीमक पौधों को भारी क्षति पंहुचाती है।

संक्रमित पौधों की पत्तियां पीली पडने लगती है जिसके परिणामस्वरूप बाद में पौधा मर भी सकता है। दीमक के नियंत्रण के लिए निम्नलिखित उपाय भी सुझाये गये है:–

पौधारोपण करते समय प्रत्येक गड्ढे में दो किलोग्राम नीम की खली का चूर्ण डालें अथवा दो किलो नीम के पत्ते, दो किलो धतूरे के पत्ते तथा दो किलो आक के पत्ते बारीक पीसकर 100 ली. पानी में घोलकर तैयार कर लें। यह तैयार किया गया घोल प्रत्येक पौधें को दो–दो लीटर पिलावें। हर 15 दिन में यह प्रकिया दो वर्ष तक दोहरानें से पौधों में दीमक नहीं लगती है।

2. बरसात के मौसम में गुग्गुल में जड गलन की बीमारीं हो जाती है जिसके कारण पौधों की पत्तियां पीली हो जाती है एवं पौधा सूख जाता है। इस बीमारी की रोकथाम के लिए पौधारोपण के समय कलम के नीचे वाले सिरे का टेफसॉन नामक कवकनाशी से उपचारित करना चाहिए।

3. इसके अलावा बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट एवं सफेद मक्खी भी गुग्गुल के पौधों को नुकसान पॅहुचाते है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

राजस्थान स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड

104-106, आयुष भवन, सैक्टर-26, प्रताप नगर, जयपुर
फोन नं. - 0141-2796975, 0141-2796845, फेक्स : 0141-2796975
Mail ID-rsmpboard@gmail.com, Website : www.rsmpb.com